IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सोमदेव सूरी के समाजिक और राजनीतिक भूमिका

ब्रजेश कुमार
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग
ल० ना० मिथिला वि वि०, दरभंगा।

सारांश

भारत में कोई औपचारिक राजनीतिक दर्शन नहीं रहा है। राज्य–व्यवस्था–शास्त्र पर अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ अवश्य उपलब्ध होते हैं दण्डनीति अर्थात् शक्ति का शासन अपनी राजनीति अर्थात् राजा धरण एक व्यावहारिक विषय रहा है। राज्य व्यवस्था पर लिखित ग्रंथ राज्य संगठन तथा शासकीय कार्यों के संचालन सम्बन्ध निर्देश देते हैं। इनमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र, महाभारत का शान्ति पर्व, रामायण, मनुस्मृति कमन्दक का नीतिसार, सोमदेव सूरी का 'नीतिवाक्यामृत' आदि ग्रंथ महत्त्वपूर्ण हैं। प्रजा को ध्यान में रखकर सीता को वनवास भोजने का विचार करने पर मजबूर होते हैं। राजतंत्र में राजा के अधिकारों के साथ–साथ जनमत का भी अपना महत्त्व रहा है। प्रस्तुत महाकाव्य में कवि ने राजतंत्र में राजा और प्रजा की स्थिति को स्पष्टतया दर्शाया है। इसमें राजा के अधिकार, कर्त्तव्यों का उल्लेख है। इसके साथ ही प्रजा की राजतंत्र में अहम् भूमिका का भी उल्लेख किया है।

मूल शब्दः *राजतंत्र, संगठन, दण्डनीति, राजनीतिक*

प्रस्तावना

समाज में स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। किसी भी समाज की खुशहाली स्त्रियों के खुशहाल जीवन पर निर्भर करती है क्योंकि स्त्री परिवार की धुरी होती है। स्वयं स्त्री खुशहाल रहेगी तो परिवार के अन्य जनों को भी खुशहाल रख पाएगी। स्त्री समाज में अनेक भूमिकाएँ निभाती है। जैसे – बेटी, बहन, पत्नी, माता और आदि शिक्षिका यानी की बच्चे की प्राथमिक गुरु एक माँ (स्त्री) ही होती है। इन सभी भूमिकाओं को निभाकर स्त्री मनुष्य के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसलिए समाज में स्त्रियों के गौरव और सम्मान की रक्षा करना सभी लोगों का कर्त्तव्य है। रामराज्य में स्त्रियों को पुरुष की गुलाम नहीं अपितु अर्धांगिनी माना गया है। इस प्रकार कवि ने एक आदर्श राजतंत्र की विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत काव्य में कवि ने राजतंत्र का वर्णन किया है जिसमें राजा रामचन्द्र का शासन अयोध्य नगरी में कायम है।

''प्रजाहितं प्रतिश्रुत्य धूर्तः साधयते न तत्।
सर्वंसहापि सहते न धरा तस्य शासनम्।।
न कर्ता केवलं वक्ता व्यवहर्ता न कर्मणाम्।
असत्यवादी दम्भी च न राजा किन्तु वञ्चकः।।''

अर्थात् जो धूर्त राजा प्रजाहित की प्रतिज्ञा करके भी उसको पूरा नहीं करता, सब कुछ सहन करने वाली भूमि भी उसका शासन सहन नहीं करती। जो केवल वचन से प्रजाहित की बात करता है व्यवहार और कार्य से नहीं, वह असत्यवादी और धूर्त राजा नहीं अपितु प्रजा को ठगने वाला है। इसमें कवि ने राजतंत्र में राजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख किया है। यह विचार वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था पर भी लागू होता है जिसमें शासक वोट के लिए जनता से झूठे वादा करते हैं और सत्ता प्राप्ति के पश्चात् अपने वादों से मुकर जाते हैं। वर्तमान राजनीति में झूठे, मक्कार और अवसरवादी नेताओं की भरमार हो गई है। सत्ताधारी लोगों में आई इस कमी को ध्यान में रखते हुए कवि ने तत्कालीन राजतांत्रिक व्यवस्था में राजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख किया है। राजा अपनी प्रजा का एक रक्षक होता है। उसे प्रजा को ठगने की बजाए प्रजाहित के बारे में सोचना चाहिए। एक आदर्श राजा के वचन और कर्म में समानता होनी चाहिए। इस प्रकार प्रस्तुत काव्य में कवि ने आदर्श राजा का चित्रण करते हुए राजतंत्र की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि ने राजा राम के घोषणा–पत्र को प्रस्तुत किया है
की प्रतिज्ञा करते हैं –

''तद्दायादोऽस्म्यहं रामः स्थापितो राज्य शासने।
भवद्भिः प्रतिजानेऽहं साक्षीकृत्य गुरु नृषीन।।
शरीरं बधवो दारा राज्यं कोषो बलं वयः।
चितं वित्तं च रामस्य धर्मायास्ति समर्पितम्।।
प्रजाहितं साधयिष्ये रक्षायिध्ये वसुन्धराम्।
न्यायस्य चापि धर्मस्य स्थापयिष्ये सुशासनम्।।''

अर्थात् मैं गुरुओं और सत्यवादी ऋषियों को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि प्रजाहित के कार्य करके राम राज्य स्थापित करूँगा। आपके सम्मुख स्थित इस राज्य का शरी, बन्धुजन, स्त्री, राज्य, कोष, शक्ति, आयु, मन और धन सभी धर्म के लिए समर्पित हैं। मैं प्रजाहित के कार्य करूँगा, भूमि की रक्षा करूँगा। न्याय और धर्म का शासन स्थापित करूँगा।

इस प्रकार प्रस्तुत काव्य में राजा राम के घोषणा–पत्र के माध्यम से राजतंत्र में लोकतांत्रिक व्यवसथा को दर्शाया है। राजा राम तानाशाही न होकर प्रजाहित की बात करने वाले आदर्श राजा के रूप में उपस्थित होते हैं। वे सिंहासन पर आसीन होने से पहले अपने गुरुओं के समक्ष अपने उत्तरदायित्व के निर्वाह की प्रतिज्ञा लेते हैं। वे तन–मन–धन से अपनीप्रजा के प्रति समर्पित होने की प्रतिज्ञा लेते हैं। राजा राम के राज्य में व्यवस्था में प्रजा सर्वोपरि है न कि राजा। इस प्रकार कवि ने एक आदर्श राजतंत्र की स्थापना की है जो

वर्तमान में भी प्रासंगिक एवं आवश्यक है। सिंहासन पर आसीन होते समय राजाराम अपने दरबार में एक घोषणा–पत्र प्रस्तुत करते हैं जिसमें वे अपनी न्याय व्यवस्था एवं दण्ड विधान के बारे में बतलाते हैं कि –

''अनृती कपटी क्रूरो लुब्धः क्रोधी च हिंसकः।
चौरः प्रमादी कर्तव्ये दण्ड्यः प्राणैर्धनैश्च वा।।''

अर्थात् झूठे, कपटी, क्रूर, लोभी, क्रोधी, जीव हिंसा करने वाला, चोर और अपने कर्त्तव्य में असावधान रहने वालाधन अथवा प्राणदण्ड का भागी होगा। राजतंत्र में शासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए दण्ड विधान का प्रावधान भी अनिवार्य होता है। प्रस्तुत काव्य में कवि ने राजा राम के घोषणा–पत्र के माध्यम से राजतंत्र में दण्ड विधान की अनिवार्यता को दर्शाया है। प्रस्तुत काव्य में केवल मनुष्यों को ही पशु–पक्षियों को भी न्याय की गुहार लगाने पर न्याय मिलता है जिसका उदाहरण 'कुत्ते' और 'उल्लू एवं गिद्ध' प्रकरण में देखा जा सकता है। राजा राम को एक न्याय प्रिय शासक के रूप में दर्शाया गया है। रामराज्य में सभी अपने–अपने कर्त्तव्यों एवं अधिकारों का पालन करते हैं। जहाँ कहीं भी किसी के अधिकारों का हनन होता है अथवा कर्त्तव्यों का उल्लंघन होता है स्वयं राजा राम उसका न्याय करते हैं। राजतंत्र में न्याय व्यवस्था में पारदर्शिता का होना आवश्यक है। न्याय–व्यवस्था की खामियाँ कुशल शासन के लिए हानिकारक होती हैं। प्रस्तुत काव्य में कवि ने कैकेयी और राम के संवाद के माध्यम से दण्ड विधान के नियमों का चित्रण किया है –

''दण्डपात्रमपि दण्ड्यते यदा तस्य मन्तुमविचार्य शासकैः।
श्रेयसे भवति तत्र दाण्डिके नैव दण्ड्य उभयत्र दूषणम्।।

अर्थात् दण्डपात्र के अपराध के ठीक से न सुनकर यदि कोई अधिकारी दण्ड देता है तो दण्डनीय और दण्ड देने वाले शासक दोनों के लिए कल्याणकारी नहीं होता। इस प्रकार न्याय प्रक्रिया में समाज में प्रचलित नियम–कानून व्यवस्था का पालन किया जाता है। सभी के अधिकारों की रक्षा स्वयं राजाराम करते हैं। यदि कोई अपने कर्त्तव्यों का अनादर करता है तो उसे तर्क संगत ाया जाता है। प्रस्तुत काव्य में राजा राम द्वारा किसी भी अपराधी को प्राणदण्ड देते हुए नहीं दर्शाया है। 'शम्बूक प्रकरण' में भी राजा राम शम्बूक को समझाकर उसे उसके कर्त्तव्यों की याद दिलाते हैं। जबकि प्रचलित रामकथा में राम द्वारा शम्बूक को मृत्युदण्ड देते हुए दर्शाया गया है। व्यावहारिक रूप से लागू होने का भी चित्रण किया है –

आदर्शभूपस्य गुणेषु भूयः प्रजासु सङ्क्रान्तिमुपागतेषु।
राजानुरूपा हि प्रजा भवन्तीत्याभाणकं सार्थकतां बभाज।।
गुरोर्वशिष्ठात् समवाप्तविद्यो नीतीस्तु राज्ये निरदीधरद्याः।
सान्दृष्टिकत्वेन हि तासु काश्चिदुदर्करम्याश्च बभुर्हि काश्चित्।।
नैवाग्निदाहात्र च तोयवृद्धेर्दुर्भिक्षतो वा गदसम्प्रसारात्।
नैवेतिजन्यं न च मारिकाया रामस्य राज्ये हि भयं बभूव।।
न सैनिकेभ्यो नृपसेवकेभ्यो न घातुकेभ्यो न च तस्करेभ्यः।
न वञ्चकेभ्यो न च शक्तिमद्भयो भयं प्रजानामभवत् कदाचित्।।
दृष्टादृष्टाच्च भयात्किलैवं मुक्ताः प्रजाः सर्वसुखानि भेजुः।

सम्प्राप्य दिग्दर्शनमात्मभूपादध्यात्मचिन्ताप्रवणा बभूवुः।।

धनुर्धराणां धुरि कीर्तनीये नरेश्वरे शास्तरि रामचन्द्रे।

राष्ट्रे विमुक्ते परचक्र भीतेस्त्रिवर्गसिद्धि स्वयमेव जाता।।''

अर्थात् आदर्श राजा के गुण प्रजा में भी संक्रमित होने से राजा के अनुरूप ही प्रजा होती है। यह कहावत चरितार्थ हो रही थी। 'यथा राजा तथा प्रजा' महर्षि वशिष्ठ से विद्या प्राप्त कर श्रीराम ने प्रजाहित में जो नीति राज्य में सुनिश्चित की थी उनमें कुछ तत्काल तथा कुछ आगे आने वाले समय में फल देने वाली थी।

संदर्भ सूची

[1] श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग/100, 101

[2] श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग/110

[3] श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग/70

[4] श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, तृतीय सर्ग/69

[5] श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, षष्ठ सर्ग/32, 33, 34, 35, 36, 37